कक्षा 10 हिंदी

पद्य साहित्य का विकास

(रीतिकाल एवं आधुनिककाल)

रीतिकाल

(सन् 1643 से 1843 ई० तक)

(सं० 1700 से 1900 वि० तक)

अन्य नाम एवं नामकरणकर्त्ता हैं –

- ☞ **अलंकृत काल** – मिश्र बंधु [2024 (801 HA)]
- ☞ **श्रृंगार काल** – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- ☞ **कलाकाल** – डॉ० रामकुमार वर्मा व डॉ० रमाशंकर शुक्ल रसाल
- ☞ **रीति–श्रृंगार काल** – डॉ० भागीरथ मिश्र
- ☞ **रीतिकाल** – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

रीतिकाल की तीन धाराएं हैं- [2024 (801 HE)]

1. रीतिमुक्त- इस धारा के कवि रीति के बंधन से पूर्णतया मुक्त हैं। अर्थात इन्होंने काव्यांग निरूपण कर ग्रन्थों की रचना न करके हृदय की स्वतंत्र वृतियों के आधार पर काव्य रचना की। इन कवियों में प्रमुख हैं-

कवि	रचनाएं
1. घनानन्द-	सुजान हित प्रबंध, सुजान सागर [2024 (801 HB,HD,HF)]
2. बोधा -	विरहवारीश, इश्कनामा
3. आलम -	आलमकेलि
4. ठाकुर -	ठाकुर ठसक
5. द्विजदेव -	श्रृंगार बत्तीसी

2. रीतिसिद्ध– इस वर्ग में वे कवि आते हैं जिन्होंने रीति ग्रन्थ नही लिखे किन्तु रीति की भली-भांति जानकारी रखते थे। इन्होंने अपनी रीति विषयक जानकारी का प्रयोग अपने ग्रन्थों में पूरा-पूरा किया है।

इस धारा के प्रतिनिधि कवि हैं- **बिहारी**

3. रीतिबद्ध– रीतिबद्ध धारा में वे कवि आते हैं जिन्होंने रीति ग्रन्थों की रचना की। कुछ प्रमुख हैं–

कवि **रचनाएं**

1. **भूषण** – भूषण रीतिकाल के एकमात्र ऐसे कवि थे जिन्होंने **वीर रस** से ओत प्रोत रचनाये लिखी।

   रचनाएँ – शिवा शौर्य , छत्रसाल दशक [2024 (801 HG)], शिवा बावनी, छत्रसाल प्रशस्ति, शिवराज भूषण।
2. **चिन्तामणि** – कविकुलकल्पतरु
3. **मतिराम** – रसराज, ललित ललाम

4. **देव** – भावविलास, भवानी विलास, काव्य रसायन
[2024 (801 HB,HE,HG)]

5. **जसवंत सिंह** – भाषा भूषण

6. **कुलपति मिश्र** – रस रहस्य

7. **भिखारी दास** – काव्य निर्णय, श्रृंगार निर्णय [2024 (801 HC)]

8. **केशवदास**– रामचन्द्रिका (*छंदों का अजायबघर*), केशव को *कठिन काव्य का प्रेत* कहा जाता है।

रीतिबद्ध धारा के अन्य कवि–

सुरति मिश्र, मंडन कवि, सोमनाथ, रसिक गोबिंद, दूलह कवि आदि।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ/ विशेषताएं-

- ☞ श्रृंगारिकता
- ☞ रीति/लक्षण ग्रंथों का निर्माण
- ☞ नारी सौन्दर्य का चित्रण
- ☞ आलंकारिकता एवं ब्रजभाषा का प्रचुर प्रयोग।
- ☞ आश्रयदाताओं की प्रशंसा राजप्रशस्ति
- ☞ चमत्कार प्रदर्शन एवं बहुज्ञता
- ☞ उद्दीपन रूप में प्रकृति का चित्रण
- ☞ ब्रज भाषा व मुक्तक शैली की प्रधानता
- ☞ भक्ति और नीति
- ☞ संकुचित जीवन दृष्टि
- ☞ नारी के प्रति कामुक दृष्टिकोण

☞ स्थूल एवं मांसल सौंदर्य का अंकन

कालों की समय–सीमा

- भारतेंदु युग – (पुनर्जागरण काल) 1868-1900 ई० [2024 (801 HD)]
- अन्य विद्वानों के अनुसार समय–सीमा 1850-1900 ई० एवं 1857-1900 ई० भी मानी जाती है।
- द्विवेदी युग – (जागरण सुधार काल)1900-1920 ई०
- छायावादी युग – 1919-1938 ई०
- प्रगतिवादी युग (छायावादोत्तर युग)–1938 -1943 ई०
- प्रयोगवादी युग – 1943-1951 ई०

भारतेंदु युग – (पुनर्जागरण काल) 1857-1900/1868-1900 ई०

☞ इस युग का नाम भारतेंदु हरिश्चंद के नाम पर पड़ा।
☞ डॉ० नगेन्द्र ने पुनर्जागरण काल नाम दिया।
☞ भारतेंदु द्वारा सम्पादित पत्रिकाएँ–कविवचन सुधा, बालाबोधिनी, हरिश्चंद चंद्रिका (हरिश्चंद मैगजीन)

भारतेन्दु युग के महत्वपूर्ण कवि एवं उनकी रचनाएँ–

☞ **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** – प्रेम फुलवारी, प्रेम सरोवर, प्रेम मल्लिका।
☞ **प्रताप नारायण मिश्र** – श्रृंगार विलास, प्रेम पुष्पावली, मन की लहर।
☞ **बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन**– आनन्द अरुणोदय, जीर्ण जनपद, लालित्य लहरी।
☞ **जगमोहन सिंह**– देवयानी, प्रेम सम्पत्ति लता, श्यामा सरोजिनी।
☞ **राधाचरण गोस्वामी**– नवभक्त माल।
☞ **अम्बिकादत्त व्यास**– भारत धर्म, हो हो होरी, पावस पचासा।

भारतेन्दु युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ/ विशेषताएं- [2024 (801 HA)]

- ☞ श्रृंगारिकता की चेतना
- ☞ सामाजिक समस्याओं का चित्रण
- ☞ समस्यापूर्ति, हास्य व्यंग्य, काव्यानुवाद
- ☞ भक्ति भावना व प्रकृति चित्रण
- ☞ देशप्रेम की व्यंजना अथवा राष्ट्रभक्ति अथवा राष्ट्रीयता की भावना

द्विवेदी युग – (जागरण सुधार काल)

1900-1920 ई० अथवा 1900-1922 ई०

☞ **नामकरण** – द्विवेदी युग आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर रखा गया।

☞ **प्रमुख कवि–** मैथलीशरण गुप्त, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', गोपालशरण सिंह, लोचन प्रसाद पाण्डेय और महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, राम नरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पाण्डेय आदि प्रमुख

★ **द्विवेदी युगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ :**

☞ जागरण–सुधार

☞ राष्ट्रीयता की भावना, समस्या पूर्ति

☞ नैतिकता एवं आदर्शवाद

☞ इतिवृत्तात्मकता / विवरणात्मकता व उपदेशात्मकता

☞ प्रकृति चित्रण।

- ☞ राष्ट्रीयता / देशप्रेम की भावना
- ☞ स्वच्छंद प्रकृति चित्रण
- ☞ खड़ीबोली की पूर्ण प्रतिष्ठा
- ☞ मानवतावादी विचारधारा
- ☞ अनुवाद की प्रवृत्ति

★ द्विवेदी युग के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ :

☞ **अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** :

प्रिय प्रवास, पद्मप्रसून, चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, वैदेही वनवास।

☞ **मैथलीशरण गुप्त** : साकेत, यशोधरा।

खण्ड काव्य - रंग में भंग, जयद्रथ वध, किसान, पंचवटी।

भारत-भारती – मैथिलीशरण गुप्त जी की ऐसी काव्यकृति है, जिसे अंग्रेजों द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था। **[2024 (801 HD)]**

☞ **श्यामनारायण पाण्डेय** : हल्दीघाटी, जौहर

☞ **रामनरेश त्रिपाठी** : मिलन, पथिक, स्वप्न, मानसी।

⋆ **सरस्वती पत्रिका** :- 1903 ई० से 1920 ई० तक इन्होंने सरस्वती नामक मासिक पत्रिका का संपादन कर एक कीर्तिमान स्थापित किया था, इसीलिए इस काल को हिन्दी साहित्येतिहास में 'द्विवेदी-युग' के नाम से जाना जाता है।

सरस्वती पत्रिका के संस्थापक – चिंतामणि घोष
प्रथम सम्पादक – बाबू श्यामसुंदर दास
द्वितीय सम्पादक – महावीर प्रसाद द्विवेदी

छायावाद युग - 1919- 1938 ई०

☞ "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।" डॉ० नगेन्द्र ने कहा।

छायावादी युग के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ-

जयशंकर प्रसाद

☞झरना, आंसू, लहर, कामायनी, कानन कुसुम, प्रेम पथिक, करुणालय

☞चित्राधार (ब्रज भाषा में रचित कविताएं)

☞प्रसाद की अंतिम कृति 'कामायनी' है, जिसमें 15 सर्ग है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

☞ इन्होंने 'मतवाला' और 'समन्वय ' नामक पत्रों का सम्पादन भी किया है ।

☞ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का 'निराला' उपनाम, 'मतवाला' के तुक पर रखा गया था।

☞ निराला को 'महाप्राण' कवि भी कहा जाता है।

☞ **रचनाएंः** अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला।

☞ **प्रमुख कविताएँ** – सरोजस्मृति, राम की शक्ति पूजा, भिक्षुक, बादलराग।

सुमित्रानंदन पंत

☞ उच्छवास, ग्रन्थि, वीणा, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, वाणी, युगपथ, उत्तरा, कला और बूढ़ा चांद [2024 (801 HG)] अतिमा, लोकायतन (महाकाव्य), चिदम्बरा।[2024 (801 HE)]

महादेवी वर्मा

☞ नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा, सप्तपर्णा

छायावाद के कवि चतुष्ट्य

1. *जयशंकर प्रसाद*
2. *सुमित्रानंदन पंत*
3. *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

4. *महादेवी वर्मा*

छायावाद के वृहत्त्रयी-

1. *जयशंकर प्रसाद*
2. *सुमित्रानंदन पंत*
3. *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

छायावाद की लघुत्रयी-

1. *महादेवी वर्मा*
2. *रामकुमार वर्मा*
3. *भगवती चरण वर्मा*

छायावाद के ब्रह्मा, विष्णु, महेश -

1. ***ब्रह्मा***- *जयशंकर प्रसाद*
2. ***विष्णु***- *सुमित्रानंदन पंत*

3. ***महेश–*** *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

छायावादी युग की प्रमुख प्रवृत्तियां/विशेषताएं –

- ☞स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह
- ☞रहस्यवादी/दार्शनिक भावना
- ☞अशरीरी प्रेम भावना का चित्रण
- ☞सूक्ष्म सौन्दर्य का चित्रण
- ☞सौन्दर्य एवं प्रेम का चित्रण
- ☞लाक्षणिक पदावली एवं प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग
- ☞मानवतावादी दृष्टिकोण
- ☞वेदना निराशा का चित्रण
- ☞गीति एवं प्रगीति मुक्तक काव्य का प्रयोग

ज्ञानपीठ पुरस्कार

- **चिदंबरा** - सुमित्रानंदन पंत (1968 ई.)
- **उर्वशी** - रामधारी सिंह दिनकर -1972 ई.
- **कितनी नावों में कितनी बार** - अज्ञेय -1978 ई.
- **यामा** - महादेवी वर्मा -1982 ई.

प्रगतिवादी युग (छायावादोत्तर युग) - 1938 -1943 ई०

- **माखनलाल चतुर्वेदी:**– हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युगचरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा।
- **रामधारी सिंह दिनकर:**– कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा।
- **बालकृष्ण शर्मा नवीन:**– कंकुम, अपलक, रश्मि-रेखा, क्वासि।
- **केदारनाथ अग्रवाल:**– युग की गंगा, लोक तथा आलोक, फूल नहीं रंग बोलते हैं, नींद के बादल।
- **रामविलास शर्मा:**– रूप-तरंग

- **नागार्जुन**:- युगधारा, प्यासी पथराई आंखे, सतरंगे पंखों वाली, तुमने कहा था, तालाब की मछलियां, हजार-हजार बांहों वाली, भस्मांकुर (खंडकाव्य)।
- **रांगेय-राघव:-** अजेय खंडहर, मेधावी, पांचाली, राह के दीपक, पिघलते पत्थर।
- **शिवमंगल सिंह सुमन**:- हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय सृजन, मिट्टी की बारात। **[2024 (801 HB)]**
- **त्रिलोचन**:-धरती।

प्रगतिवादी की प्रमुख प्रवृत्तियां/विशेषताएं -

प्रयोगवादी युग- 1943 - 1951 ई०

- प्रयोगवाद के **प्रवर्तक** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय जी हैं
- अज्ञेय के संपादन में चार सप्तकों का प्रकाशन भी हुआ है, जो निम्न है :-
  - तार सप्तक- 1943 ई० **[2024 (801 HF)]**

- दूसरा सप्तक- 1951 ई० **[2024 (801 HB)]**
- तीसरा सप्तक- 1959 ई०
- चौथा सप्तक- 1979 ई० **[2024 (801 HA)]**

❖ **तार सप्तक** :- संपादक-अज्ञेय

❖ **प्रकाशन वर्ष**-1943 ई०

❖ **प्रमुख कवि-*Trick***- अ० मु० भा० प्र० गि० रा० ने०

1. *अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय')*
2. *मुक्तिबोध (गजानन माधव 'मुक्तिबोध')*
3. *भारत भूषण अग्रवाल* **[2024 (801 HC)]**
4. *प्रभाकर माचवे*
5. *गिरिजाकुमार माथुर*

6. *रामविलास शर्मा*
7. *नेमिचंद जैन*

प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियां/विशेषताएं – **[2024 (801 HE)]**

- अहंवाद, व्यक्तिवाद, यथार्थवाद एवं क्षणवाद
- निराशा और अनास्था
- अतिशय बौद्धिकता का प्राधान्य
- यथार्थ की कुरुपता का चित्रण
- अति नग्न यथार्थवाद
- विद्रोह की भावना
- व्यंग्य की प्रखरता
- शिल्प की नवीनता
- बिम्बों, प्रतीकों एवं नवीन उपमानो का प्रयोग